अल्फाज – अलबीर (स्पेन)
महाशिवरात्रि, मार्च १२, २००२

सन्देश संख्या ४७

शिवत्व क्या है?

शिवत्व नृत्य है – शून्यता और एकाकित्व में नृत्य – लाहिड़ी, प्रेम, क्रियायोग का लय योग है। शिव क्रियायोग का सत्य (स्वाध्याय), सतत अभ्यास (तापस) और ज्ञानातीतत्व (ईश्वर प्रणिधान) है। वह (एकाकित्व) हमारी प्रज्ञा और कौतुक का जनक है। वह एक प्रशान्त सलाहकार एवं परामर्शदाता है जो अपने कान्तिमय मुस्कान से हमारे विषाद और निराशा के घने बादल को दूर कर देता है और सदैव शांत एवं सुरक्षित शाश्वत ज्योति (कुण्डलिनी) की ओर इंगित करता रहता है। वह हमें सहज अवस्था की समग्रता की ओर ले जाता है। शिवत्व में कोई 'अहंकेन्द्र' नहीं होता जो अनुभव एवम् अनुभवकर्ता के द्वैत में फँसा हो। जल जल को अनुभव नहीं करता है। अग्नि अग्नि को अनुभव नहीं करती है। सत्य को निर्धारित करने के सारे प्रयास मात्र विकार और अहंकार को जन्म देते हैं और इसलिए वे सत् से दूर ले जाते हैं। शिवत्व (निर्मन) के विषय में समस्त तर्क एवं प्रस्तावनायें मन के विकार और विरोधाभास मात्र हैं। उस ओजपूर्ण ऊर्जा (शिव) का प्रत्यक्षबोध तभी होता है जब सांस्कृतिक गठरी एवम् अनुबन्धित प्रतिक्रियाओं द्वारा तैयार किया गया मानस पटल छिन्न–भिन्न हो जाता है, जब हमारे लालन–पालन, शिक्षा–दीक्षा और उत्तरदायित्वबोध द्वारा निर्मित मानसिक यंत्र न हो जाते हैं तथा जब भय एवं लोभ द्वारा रचित व्यूह भंग हो जाता है। यह मौलिक रूपान्तरण ही शिवत्व है जो नाना प्रकार के विश्वासबन्धनों और उनके मानसिक, स्नायविक तथा गुह्य आयामों में आसक्त मन की अन्तर्भूत शरारत एवं निपट छिछलेपन के द्वारा नहीं लाया जा सकता है। शिवत्व के साथ अभिनव मानव का जन्म होता है जो अनुयायी या अंधविश्वासी नहीं होता है। वह विभिन्न प्रकार के विश्वासों और अविश्वासों, अच्छाइयों या बुराइयों, सही या गलत, मित्र या शत्रु, आनन्द या आघात, ईश्वर या शून्यता के परे होता है। यह अभिनव मानव वह द्वार है जिससे होकर वह बिना दूसरों का सहारा लिए आसक्ति एवं लालसा के कारागार से बाहर निकल आता है। शिवत्व मानवता का पुनरूद्धार है। यदि हम ''मैं'' के बनाये गए ड्गंदे में ही जीवन को उलझाये रहे तो मानवता की और अधोगति एवं विनाश अवश्यम्भावी है। शिवत्व समझदारी, धैर्य, दृढ़ता, परिपूर्णता एवं निर्दोषता है। यह असावधानी, उपेक्षा या अकमण्यता नहीं है। यही है सही साधन, सही स्थिति एवं सही प्रक्रिया।

शिवत्व में होना एकाकित्व (एकत्व) है। यह अलगाववादी विचारधारा नहीं है। यह विद्रोही अवस्था है जिसमें अधिकार, पद, प्रतिष्ठा, प्रसिद्धि एवं प्राप्तियों के लिए माफिया और गिरोहबन्दों को संगठित करने वाली तथाकथित 'क्रान्तिकारी' अवधारणायें स्वीकार्य नहीं होती हैं।

शिव (एकाकित्व) उस पूरे सामाजिक ढाँचे का विरोधी है जो प्रतियोगिता के रूप में ईर्ष्या को प्रोत्साहित करता है, उपभोक्तावाद के रूप में लोभ को बढ़ावा देता है, प्रार्थना के रूप में भय को परिपुष्ट करता है तथा संगठित धर्मान्धता और क्रूरता को विश्वास–पद्धतियों के द्वारा प्रोत्साहित करता है। समाज केवल शासन स्तर पर ही नहीं वरन् मठों के स्तर पर भी अपने अद्भुत वर्चस्व का परिचय देता है। अधिकार के लिए किए जाने वाले समस्त प्रयास मन की नग्न एवं कुरूप गतिविधियाँ हैं।

मन सदैव निहित स्वार्थों और व्यर्थ मान्यताओं में फँसा रहता है और इसीलिए अधिकार मनुष्य को भ्रष्ट एवं नष्ट कर देता है। केवल वह चेतना, जो विभेदकारी चित्तवृत्ति की अवधारणाओं से सम्बन्ध नहीं रखता है, एकाकित्व (शिवत्व) को प्राप्त कर सकता है। एकत्व वह नहीं है जिसे कृत्रिम रूप से विकसित किया जा सके। यह तो स्वतः उद्भासित होता है और तब व्यक्ति दुनिया की आपाधापी से बाहर निकल आता है। ऐसी अवस्था में उसे सांसारिक मानदंडों के अनुसार कोई मान्यता या महत्व मिले या न मिले इसकी उसे परवाह नहीं रहती। एकाकित्व में कोई महत्वाकांक्षा नहीं होती। महत्वाकांक्षी मनुष्य, चाहे धार्मिक हो अथवा साधारण, उसे करुणा और प्रेम की अनुभूति नहीं हो सकती है। एकाकित्व विनम्रता है। एकाकित्व अनुराग है – आक्रमण नहीं। एकाकित्व पूर्ण जीवन का स्वरूप है इसलिए पूर्ण क्रिया है। एकाकित्व अहंकार रूपी कपोलकथा का परिसमापन है।

।। जय शिवशंकर, बम बम हर हर ।।